11:00
14/5/21

अहिंसा के दूत

कहानी का सारांश

इस कहानी में हमें मोहन यानि महात्मा गांधी के बचपन की एक किस्सा सुनेंगे। मोहन को पेड़ पर उछल कूद करना बहुत अच्छा लगता था, पर उनके मना करते थे क्योंकी अगर मोहन गिरगए, तो उन्हें चोट लगजाएगी। पर मोहन उनकी बात ने सुनकर वे पेड़ पर चढ़ जाते थे।

पर एक दिन, मोहन लुक-छिपकर मोहन पेड़ पर चढ़कर उछल कूद करने लगा, लेकिन खिड़की से उनके बड़े भाई ने देख लिया। उसी बड़े भाई ने मोहन की टाँग खींचली और वे दोनों गिरगए, चोट नहीं आई लेकिन खरोंचे आई हैं, इसलिए बड़े भाई ने मोहन के गाल पर तमाचा मारा और मोहन अपनी माँ के पास जाकर सब बतादिया।

मम्मी ने मोहन से कहा कि वे बड़े भाई को भी मारेंगे। पर मोहन उदास होकर बोले, भैया मुझसे बड़े हैं, और हमें तमाचे का जवाब तमाचे से नहीं दे सकता, आप मारने को क्यों नहीं समझाती बल्कि आप मुझे मारना क्यों सिखाती

है, इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि बड़ों का सम्मान छोटों का कर्तव्य है, किंतु इसकी शिक्षा बड़ों को अपने आचरण के द्वारा छोटों को देनी चाहिए।